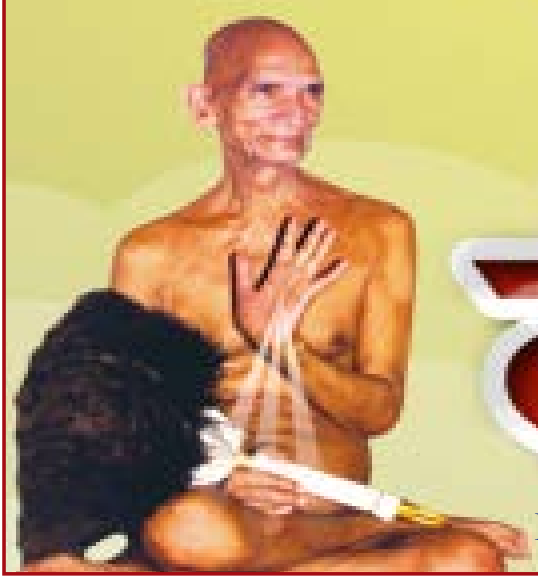

Issue: 148
03 Sept. 2020
www.jainachar.com Daily

जैनाचार

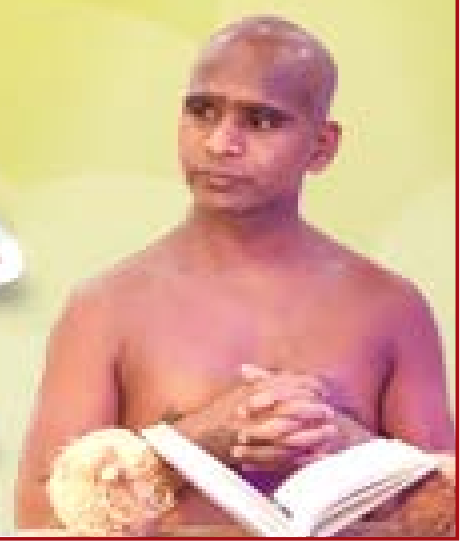

Editor: Mamta Anil Gandhi - Mumbai 9619160611 / 9323804751

{kekok.kh io lkekftd njh dk lkFk vkt ¼3 flrcj½ euk;k tk,xk

nljk ls {kek ekxu s igys Lo;a ls {kek ekx

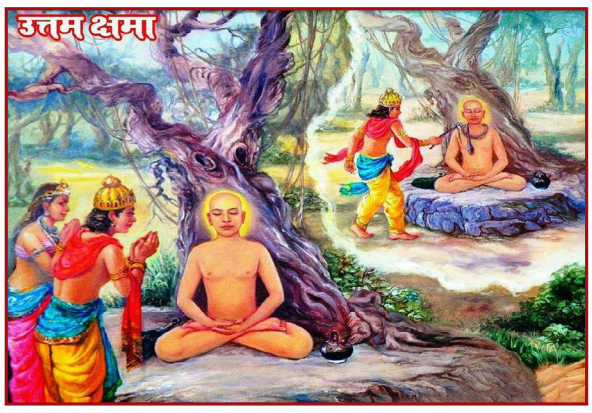

आपने क्रोध करके अपने आप का सबसे ज्यादा नुकसान किया है उसके लिए सबसे पहले स्वयं से क्षमा माँगना चाहिए। क्षमा दूसरों के द्वारा दी जाने वाली नहीं वरन स्वयं को अंगीकार करने वाली भावना है, दूसरा क्षमा करें या ना करें हमें उसे क्षमा कर देना चाहिए। पर्वाधिराज पर्युषण के समापन के बाद क्षमावाणी विषय पर ऑनलाइन प्रवचन करते हुए आचार्य श्री विशुद्ध सागर महाराज ने बिहार राज्य के वैशाली से यह बात कही। उन्होंने कहा कि दूसरे को प्रभावित करना या दूसरे से प्रभावित होना इस बात की निशानी है कि आपमें क्षमा का अभाव है।क्षमाशील व्यक्ति ना तो किसी को प्रभावित करता है और ना ही किसी से प्रभावित होता है।

क्षमावाणी पर्व, इंदौर में कांच मंदिर पर सामूहिक रूप से 100 वर्षों से भी अधिक समय से मनाया जाता रहा है। विपदा के इस काल में व्यक्तिगत दूरी का ख्याल रखना है इस कारण इस वर्ष परंपरागत रूप से क्षमावाणी ऑनलाइन मनाई जा रही है। दिगंबर जैन सामाजिक संसद के अध्यक्ष राजकुमार पाटोदी, सुशील पंड्या, राजेंद्र सोनी व संजीव जैन संजीवनी ने बताया कि पिछले वर्षों की भांति ही इस वर्ष भी शाम 5.00 बजे से ऑनलाइन क्षमावाणी मनाई जाएगी।

पर्वाधिराज पर्यूषण पर्व के साथ–साथ पंचमेरू, सोलह कारण व अन्य पर्व भी अनंत चतुर्दशी के साथ समापन हो गए हैं रत्नत्रय व्रत की आराधना व्रत पर्व आज (3 सितंबर) समाप्त हो जाएगी। इन सभी व्रतों का पालन करने वाले महा व्रतियों को दिगंबर जैन समाज सामाजिक संसद द्वारा प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मानित भी किया जाएगा। ऑनलाइन व टीवी पर प्रसारित कार्यक्रमों में सर्वप्रथम इंदौर में विराजमान सभी संतो के दर्शन, श्रीजी का अभिषेक, आचार्य श्री विद्यासागर महाराज के संघस्थ ब्रह्मचारी श्री सुनील भैया के प्रवचन होंगे इसके बाद सभी पदाधिकारी, आमजन से क्षमा याचना करेंगे।

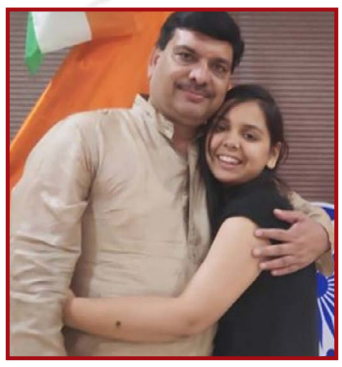

दिगंबर जैन समाज सामाजिक संसद द्वारा इस आपदा काल में कार्य करने वाले सभी मीडिया कर्मियों, प्रशासनिक अधिकारियों, सफाई कर्मियों, स्वास्थ्य सेवाओं में कार्यरत व्यक्तियों, जल एवं बिजली कार्य में लगे सभी साथियों का अभिनंदन ज्ञापित किया है और इन सभी कोरोना वीरो से अपनी ज्ञात और अज्ञात गलतियों के लिए क्षमा मांगी। संजीव जैन संजीवनी

vfHkuanuh; 0;fäRo Jh clardqekj 'kkL=h th thou 89 clar gks x, ikj

अस्थियां बिखरने से पहले जीवन में आस्था पैदा हो जाए। और चिता जलने से पहले अपनी चेतना जाग जाए। जीवन सार्थक हो जाएगा। जीवन तो सभी जीते है परंतु जो जीवन को जीवंत कर दे वही जीवन सार्थक अभिनंदनीय वंदनीय है।

एक ऐसे ही अभिनंदनीय व्यक्तित्व है जो जीवन को जीवंत करने की राह पर प्रति पर प्रति क्षण गतिमान है जिनका नाम ही बसंत है जो अपने जीवन के 89 बसंत पार कर चुके है। देव शास्त्र गुरु के परम भक्त व्यवहार कुशल प्रभावशाली अनेकानेक साधु संतों का मंगल आशीष पाने वाले अनेकानेक धार्मिक अनुष्ठान करवाने वाले संयम साधना की राह पर चलने वाले श्रद्धेय श्री बसंत कुमार शास्त्री का जन्म आगमनिष्ठ मुनि भक्त स्व श्री किस्तूरचन्द जी जैन संस्कारवान सद ग्रहणी श्रीमति गुलाम बाई के घर आँगन में फाल्गुन शुक्ला 7 सन 1932 शिवाड़ सवाई माधोपुर (राज) में हुआ। आपकी धर्मपत्नी धार्मिकनिष्ठ श्रीमती विमला देवी जैन है। आपका बोहरा गोत्र है। लौकिक शिक्षा बी.कॉम तक रही। आपको शास्त्री, धर्म विशारद वाराणसी से सन 1998 में उपाधि मिली। इन्होंने मात्र 20 वर्ष की अल्प आयु में ही जमीकंद व रात्रिभोजन और 1962 मैं बाजार का खाना और सामूहिक जीवन का त्याग कर दिया। 1989 में इन्होंने ब्रम्हचारी व्रत धारण कर लिया 2015 में इन्होंने हरि सब्जियों और अन्न का त्याग व आठवी प्रतिमा परम पूज्य आचार्य इंद्रनंदी जी महाराज से निवाई मे ली। आपने दसवीं प्रतिमा महावीर जयंती के पावन पर्व पर 2016 में शिवाड़ में गुरु माँ गणिनी आर्यिका 105 श्री विशुद्ध मति माताजी से धारण की। आपने आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज, आचार्य वीरसागर जी महाराज बनेता, आचार्य देशभूषण महाराज जी, आचार्य शिवसागर जी महाराज, आचार्य महावीरकीर्ति जी महाराज, आचार्य विद्याभूषण जी महाराज ससंघ, एवम प्रथम गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माताजी ससंघ गणिनी आर्यिका विशुद्ध मती माताजी शिवाड आर्यिका गरिमामति व आर्यिका गम्भीरमती माताजी जैसे जैन साधु संतों का सानिध्य एवम मंगल आशीर्वाद प्राप्त कर अपने जीवन को सार्थक व धन्य किया है।

आपके भरे पूरे परिवार में पाँच पुत्र–पुत्रवधु, पोत्र 4 एवम पोत्रिया 5 है। आप इसी प्रकार निरंतन संयम मार्ग पर आगे पड़ते रहे यही मंगल भावना वीर प्रभु से सदैव करती हूँ।

प्रस्तुति–सुश्री गरिमा खुशबू जैन, आर के पुरम कोटा (राज) 9414764980

क्षमा वीर का आभूषण है, कायरों का श्रृंगार नहीं..

क्षमा करे, क्षमा मांग ले जीत है इसमें हार नहीं है,
क्षमा वीर का आभूषन है, कायरों का श्रृंगार नहीं।

आत्मार्थियों! क्षमा से शुरुवात और क्षमा से पर्युषण का अंत, यह क्षमा सब धर्मो की जननी है। एक दूसरे से विशेष जो अपने करीब से अपने भाई, काकाजी, पड़ोसी से क्षमा मांग लो, क्षमा कर लो। सब विकारो का बोझ लेकर मत घूमों, अन्यथा घूमना ही पडेगा। विकारो के, कषायों के बोझ के कारण जीव सातवे नरक तक नीचे घूम रहा है।

ज्ञानियों! जिन्होंने विकारों के बोझ को हल्का कर दिया, वे उपर और उपर ही चले गये। भवातीत होकर भगवान बन गये। जो वीर होता है वही क्षमा मांगता है, वही क्षमा करता है। भगवान महावीर स्वामी के चारित्र में कहीं पर वह घटना लिखी गयी है कि, जिस वक्त महावीर स्वामी पर एक अधर्मी उपसर्ग करता है, भाले से प्रभु के ऊपर वर्षा हो रही है, उस समय प्रभु के आंखो से आंसु बह रहे है। उपसर्ग से वे चलायमान नहीं हुये, क्योंकि वे अनंत वीर्य की धनी है। पर उन्हें उस अधर्मी की चिंता हो रही थी कि इसके यह कर्म इसे किस गति कितने अशुभ कर्मो का बंध कर रहा है, कहाँ भुगतेगा? भगवान महावीर स्वामी के वचनों को गणधर भगवानने छोटे से सूत्र में गर्भित किया है,

खम्मामि सव्व जीवानं सव्वे जीवा खमंतु में, मित्ती में सव्व भूदेसू वैरं मज्झं णलेणंदि।

सभी जीवों से क्षमा वही मांगता है, जिसके क्रोध कषाय का अभाव हो गया है, जिसके अंदर से मान हट गया है वही सभी जीव को क्षमा करता है, जिसके अंदर मायाचारी नहीं उसीके लिए सारे जगत के जीवों के प्रति मैत्री भाव आयेगा। ओर अंत में जहाँ लोभ नहीं वहां किसके प्रति वैर रहेगा।

युवाओ, कषायों का अभाव कर क्षमा को अपने जीवन में आद्य स्थान दिजीए और परस्पर में सहयोग दिजी, ऐसा व्यवहार आपके जीवन में हो इसी मंगलमय भावना के साथ...

जय बोलो, चौबीस तीर्थंकर भगवान की जय!!

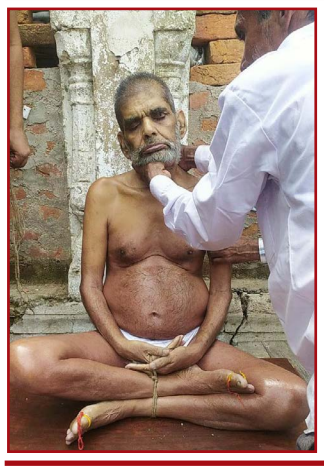

vfr'k; {k= Je.kkn; rhFk njxoka th ftyk Vhdex< ¼e- ç-½ es lekfèk

ije iT; x.kkpk;l Jh 108 fojkxlkxj th egkjkt dk ije f'k"; vkpk;l Jh 108 fofu'p; lkxj th egkjkt dk ije f'k"; NYyd Jh 108 çdhrlkxj th egkjkt ¼l?kLFk½ dh lkef;d djrs gq, vfr'k; {k= Je.kkn; rhFk njxok th ftyk Vhdex< ¼e- ç-½ es lekfèk gks x;h gA

{kek cjkcj ri ugha] {kek èkel vkèkkj Kkuh dk Hk"k.k {kek] Økèk fouk'ku gkj

कहा गया है क्षमा के बराबर कोई तप नहीं होता और न ही कोई तपस्या है क्षमा ही धर्म का आधार है क्षमा ही जीवन की ज्योति है कहा गया है। ज्ञानी का आभूषण भी क्षमा होती है, जो व्यक्ति क्रोध मे अपना विनाश कर लेता है व्यक्ति के जीवन मे क्षमा का भाव हमेशा रहना चाहिये।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज क्षमा की प्रतिमूर्ति, संस्मरण, क्षमामूर्ति...

पूज्य आचार्य भगवन उत्तम क्षमा को धारण करने वाले अद्भुत संत है, उनकी हर क्रिया क्षमा से ओतप्रोत है। एक बार की बात है रात्रि के समय आचार्य श्री जी की वैयावृत्ति चल रही थी तब किसी श्रावक ने आचार्य श्री की आंखों में गलती से अमृतधारा लगा दी, जिसे लगाते ही आचार्य श्री जी की आंखों से आंसू निकलने लगे, लेकिन आचार्य भगवन तो क्षमा के भंडार हैं। उन्होंने उस श्रावक को कुछ नहीं कहा और समता पूर्वक उस दर्द को स्वयं सहन कर लिया। वास्तव में यह है वास्तविक क्षमा क्रोध का कारण उपस्थित होने पर भी क्रोध नहीं करना यह उत्तम क्षमा का लक्षण है, जो आचार्य श्री जी की प्रत्येक क्रिया में हमें देखने को मिलता है। चंद पंक्तिया....

क्षमा को जीवन मे लाता है, नव चेतना को लाता है,
क्षमा बैर भाव मिटाता है, धन्य जीवन वो करता है,
जो क्षमा को धारण करता है, सबसे क्षमा सबको क्षमा....

अभिषेक जैन लुहाड़ीया रामगंजमंडी